B.A. II, Paper-4
Systems of Psychology
By - BAKHTEYAR FATMI

Ques :- Contribution of Ruth Benedict as a Neo-Freudians.

Ans :- नव-फ्रायडवादी के रूप में रूथ बेनेडिक्ट के योगदानों का मूल्यांकन करें।

Ans :-

'Freud' ने मनोविश्लेषणवाद की नींव डाली, इसका रूप निर्धारित किया और एक बड़ी संख्या में छात्रों (विद्यार्थियों) को मनोविश्लेषण में प्रशिक्षित किया। लेकिन 1911 में Adler अलग हो गए, 1914 में Jung अलग हुए, 1923 में Rank ने भी अलग रास्ता चुन लिया। यह तीनों फ्रायड के ही द्वारा प्रशिक्षित थे लेकिन फ्रायड से अलग होकर अपने विचार-तंत्रों को फ्रायडवाद से अलग बताया। इन लोगों से भिन्न कुछ ऐसे लोग भी हुए जो फ्रायड के यहाँ प्रशिक्षित हुए परन्तु कुछ नए अवलोकनात्मक प्रदत्त (data) के आलोक में फ्रायडवाद (Psychoanalysis) के मूल तत्वों को बचाते हुए उसमें बड़े पैमाने पर संशोधन का प्रस्ताव किया। ऐसे विद्वानों को नव-फ्रायडवादी (Neo-Freudian) कहा गया। ऐसे विद्वानों में Ruth Benedict (रूथ बेनेडिक्ट) का भाग महत्वपूर्ण है।

सच पूछें तो मनोविश्लेषण का आरम्भ तो मानसिक रोगों की चिकित्सा के क्रम में हुआ परन्तु धीरे-धीरे इसने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास, सामान्य तथा असामान्य को अपने मनोविश्लेषणवाद में समेट लिया। मौजूदा शताब्दी के दूसरे और तीसरे दशकों में Sociologists एवं Anthropologists ने विभिन्न संस्कृतियों, विशेषतः आदि संस्कृतियों के अध्ययन के आधार पर व्यक्तित्व विकास का नया रूप प्रस्तुत किया। 1934 में Ruth Benedict ने अपनी पुस्तक "Patterns of culture" का प्रकाशन किया जिससे यह स्पष्ट हुआ कि मानव व्यक्तित्व संस्कृति का रूप निर्धारित करता है या समाज और संस्कृति द्वारा मानव व्यक्तित्व का निर्माण होता है? इन्होंने सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययनों द्वारा मनोविज्ञान को अधिक यथार्थवादी बना दिया जिससे प्रत्येक संस्कृति के एक आधारिक व्यक्तित्व प्रतिरूप (Basic Personality pattern) की बात उभरी। Webster Dictionary के अनुसार — "Ruth Benedict was a pioneering Anthropologist who became America's leading specialist in the field, best known for her 'Patterns of culture' theory."

संस्कृति तभी संस्कृति कहलाती है, जब उसके आन्तरिक तत्वों में (एकीकरण) Integration होता है। इसी दिशा में श्रीमती रूथ बेनेडिक्ट ने भी एक विचार दिया है। उनके अनुसार संस्कृति के अनेक तत्व होते हैं। इन तत्वों में 'संस्कृति के विशिष्ट गुण', संस्कृति की प्रथाएँ 'संस्कृति की प्रथाएँ' 'संस्कृति की रूढ़ियाँ' सभी शामिल होते हैं। जब हम संस्कृति की इन सभी बातों का वर्णन कर लेते हैं, तब भी कुछ ऐसी चीज़ें रह जाती हैं जो इन सभी मानकों को एक सूत्र में पिरोकर इनका 'एकीकरण' (Integration) करती हैं, जिसके बिना हम संस्कृति की जान से अपरिचित रह जाते हैं। इन मानकों का जो सूत्र है, संस्कृति के इन भिन्न-भिन्न गुणों को जो वस्तु जानदार बनाती है उसे ही 'सांस्कृतिक-प्रतिमान' (Pattern of culture) कहा जाता है। जैसे, किसी संस्कृति में यह पाया जाता है कि उस संस्कृति के लोग बड़े से बड़े दुख को हंसते हुए झेलते हैं जबकि किसी संस्कृति के लोग ज़रा-ज़रा सी बात पर आंसू बहाए बिना बात ही नहीं करते। ये दोनों दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के प्रतिमान (Pattern) हैं। Ruth Benedict के अनुसार ये सांस्कृतिक-प्रतिमान वे तत्व हैं जो संस्कृति के अन्य विशिष्ट गुणों के परिवर्तित हो जाने पर भी नहीं बदलते। किसी संस्कृति की मुख्य वस्तु उसके 'विशिष्ट गुण' नहीं हैं, बल्कि उसके 'प्रतिमान' हैं, उसके आदर्श हैं, उसके उद्देश्य हैं। जैसे, भारतीय संस्कृति का 'प्रतिमान' मोक्ष था, बन्धनों से छूटना था; परमार्थ की ओर जाना था। यद्यपि भारतीय संस्कृति में अर्थोपार्जन किया जाता था फिर भी 'मोक्ष' इस संस्कृति का 'प्रतिमान' था।

Benedict के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रतिमानों के मिलने से एक ऐसा विशाल प्रतिमान बन जाता है जो किसी संस्कृति के जीवन का एकमात्र स्रोत बन जाता है। Benedict ने अपनी पुस्तक "Patterns of culture" में तीन संस्कृतियों के अध्ययन से अपने मत की पुष्टि की। ये तीन संस्कृतियाँ हैं —

(i) Dobu (डोबू) संस्कृति
(ii) Kwakiutl (क्वाकियुटल) संस्कृति, तथा
(iii) Pueblos (प्युबलोज़) संस्कृति जिसमें एकोमा, जूनी तथा होपी लोग आ जाते हैं।

व्यक्तित्व और संस्कृति का पारस्परिक सम्बन्ध

Ruth Benedict ने व्यक्तित्व पर पड़ने वाले संस्कृति के प्रभावों में महत्व को स्वीकार करते हुए लिखा कि — "बच्चा जिन

Scanned with CamScanner

प्रभावों के बीच पैदा होता है, वे आरम्भ से ही उसके अनुभवों तथा व्यवहारों को ढालती हैं। फलतः बच्चा धीरे-धीरे ही अपनी संस्कृति का एक छोटा प्राणी बन जाता है। फिर, जब वह बड़ा होता है और संस्कृति के कार्यों में हिस्सा लेकर भागीदार बनता है, तो संस्कृति की आदतें उसकी आदतें, संस्कृति के विश्वास, उसके विश्वास और संस्कृति की आसम्भावनाएं उसकी अपनी आसम्भावनाएं बन जाती हैं। व्यक्ति की संस्कृति उसे वह कच्चा माल प्रदान करती है, जिससे वह अपने जीवन का निर्माण करता है। यदि यह कच्चा माल अपर्याप्त है तो व्यक्ति का विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाता और यदि यह पर्याप्त है तो व्यक्ति को उसका सदुपयोग करने का अवसर मिल जाता है। अतः स्पष्ट है कि व्यक्तित्व और संस्कृति का पारस्परिक सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ है। संस्कृति ही व्यक्तित्व को एक निश्चित स्वरूप व दिशा प्रदान करती है।"

व्यक्तित्व को अनेक सांस्कृतिक कारक प्रभावित करते हैं जिनमें निम्न प्रधान हैं—

1. सांस्कृतिक परम्पराएं — परम्परागत विश्वास एवं धारणाएं।
2. प्रथाएं — विशेष सांस्कृतिक विधि द्वारा कार्य करने की प्रथाएं।
3. रूढ़ियाँ — सामाजिक व्यवहार तथा आचरण के आदर्श नियम
4. आचार और धर्म — नैतिक मापदण्ड, धार्मिक आचरण, धार्मिक आदर्श और विश्वास।
5. बालक की शिक्षा — शिक्षा तथा पालन-पोषण की प्रचलित पद्धतियाँ
6. संस्थाएं — जीवन लक्ष्य व आवश्यकताओं की पूर्ति के विशेष साधन।

इस प्रकार स्पष्ट है कि Ruth Benedict के अनुसार संस्कृति का व्यक्तित्व पर जन्म से ही प्रभाव पड़ता है और यह प्रभाव जीवनपर्यन्त चलता रहता है। संस्कृति में परिवर्तन बहुत कम होते हैं, इसकी प्रकृति अपेक्षाकृत स्थायी होती है। संस्कृति मानव व्यक्तित्व को तीन ढंगों से प्रभावित करती है—

(i) जन्म लेते ही शिशु मानव निर्मित वातावरण में प्रवेश करता है। इस वातावरण में परिवार का वातावरण, भौतिक वातावरण, अभौतिक वातावरण आदि सभी सम्मिलित होते हैं। यह सभी प्रकार के वातावरण बालक के व्यक्तित्व के निर्माण को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं।

(ii) संस्कृति व्यक्ति को कुछ निश्चित व्यवहार प्रतिमानों (Patterns) के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। प्रत्येक संस्कृति के व्यक्तियों के रहन-सहन, खान-पान आदि से सम्बन्धित कुछ नए

एवं निश्चित व्यवहार होते हैं। इस निश्चित व्यवहार प्रतिमानों को ही बालक सीखता है। वह समाज के मूल्यों, मानकों, नियमों तथा व्यवहार प्रतिमानों को भी अपनी संस्कृति द्वारा प्रदत्त सामग्री के अनुसार ही सीखता है।

(iii) संस्कृति के उचित व्यवहार प्रतिमानों को सीखने के लिए पुरस्कृत किया जाता है और संस्कृति में इस प्रकार की व्यवस्था होती है कि व्यक्ति यदि अनुचित या संस्कृति के विपरीत व्यवहार अपनाता है तो उसकी बुरी आदतों और प्रतिकूल व्यवहार को छोड़ने के लिए भर्त्सना और दण्ड का प्रावधान होता है।

अतः स्पष्ट है कि Ruth Benedict ने व्यक्तित्व के विकास पर संस्कृति के प्रभाव की अनोखी व्याख्या की। हालांकि आलोचकों ने इनके Patterns of culture सिद्धान्त की आलोचना भी की। OPLER के अनुसार Benedict ने संस्कृति की आत्मा को दो भागों में बांटा है — शान्त भावना और अशान्त भावना। लेकिन किसी संस्कृति के प्रेरक कारण केवल दो ही नहीं होते बल्कि अनेक रूपों में अपने को प्रकट कर सकती हैं।

इन आलोचनाओं के बावजूद हम कह सकते हैं कि Benedict ने मनोविज्ञान को यथार्थ स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। Mead के अनुसार — "Ruth Benedict was an Anthropologist whom focused much of her work on culture and Personality. She entered the field of anthropology from a strong humanistic background and continued that throughout her work." (रूथ बेनेडिक्ट एक मानवशास्त्री थीं जिन्होंने व्यक्तित्व एवं संस्कृति के आयाम पर गहन ध्यान दिया। उन्होंने प्रबल मानवतावादी पृष्ठभूमि से मानवशास्त्र में प्रवेश किया और सम्पूर्ण कार्यों में उसे बनाए रखा")

[signature]
20/5/2020